मोरंगे

मई–जून 2016

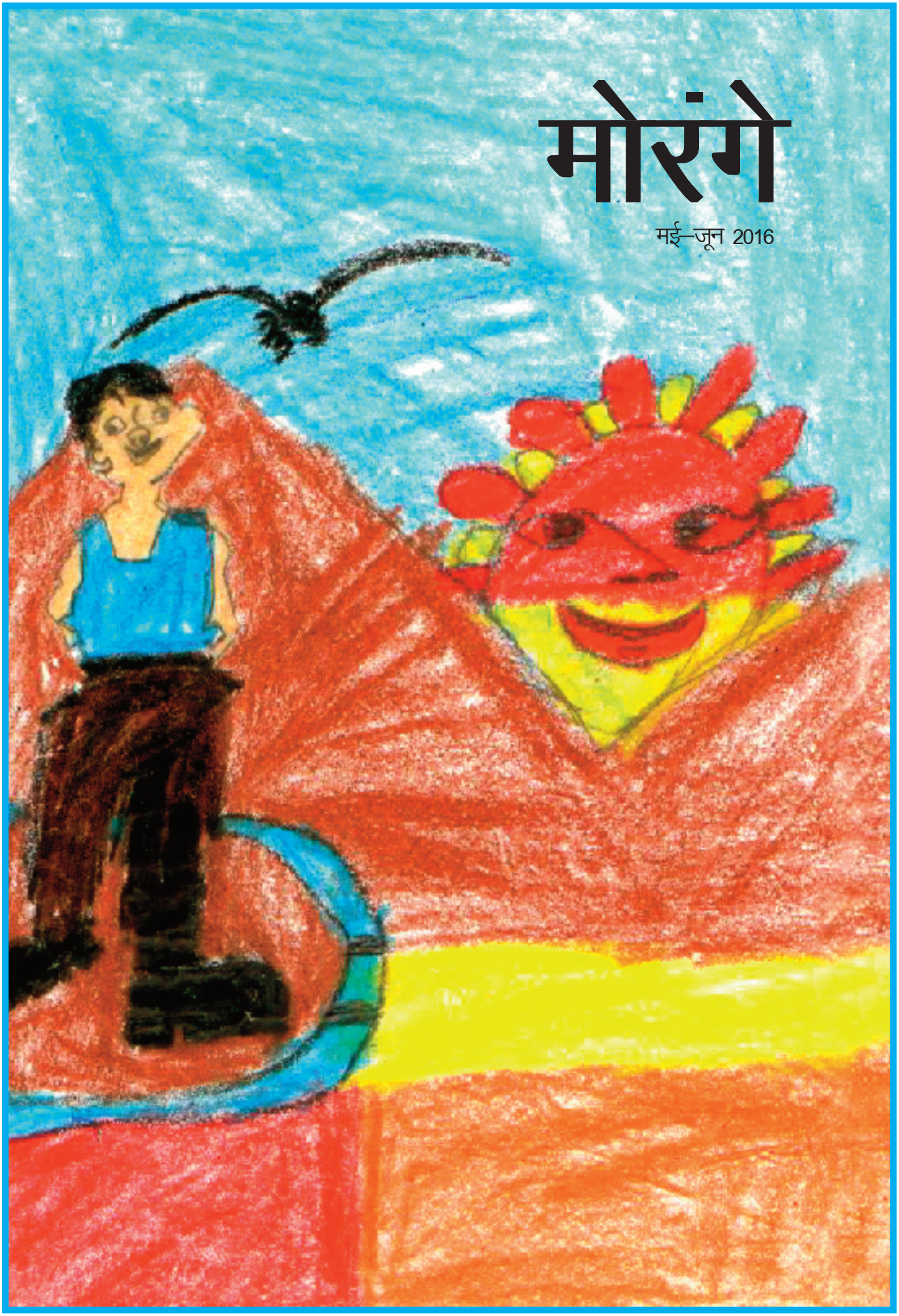

इस बार

खिड़की

3 देवी

कविताएँ

4 तितली

5 चिड़िया का घर / दाना

6 बंदर

7 चलना पड़ता

कहानियाँ

8 जाल

9 हाथी की मित्रता

10 उड़ने वाला घोड़ा

11 बेचारा मुर्गा

12 समझदार चूहा

13 सुल्तान

याद की धूप–छाँव में

14 घाँस

15 शेर राजा

सनी नायक,
उम्र–5 वर्ष
समूह–कदम्ब

बात लै चीत लै

17 जादुई शक्ति

18 **भाषा की सहेलियाँ ...**

19 **हीहीही–ठीठीठी**

20 **कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ**

23 **तेरी मेरी, मेरी तेरी बात**

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : विजय सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव, **ग्रामीण शिक्षा केन्द्र**
आवरण पर चित्र :
जय सिंह,
उम्र–10 वर्ष, समूह–तिलक

मई–जून 2016, वर्ष 7, अंक 71–72

मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया एवं 'हैसली फैमिली फाउण्डेशन' के सहयोग से हो रहा है।

पत्रिका का पता

मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
राजस्थान 322001

फोन : 07462–220957
फैक्स : 07462–220460

खिड़की

देवी

रात भीग चुकी थी। मैं बरामदे में खड़ा था। सामने अमानुददौला पार्क नींद में डूबा खड़ा था। सिर्फ एक औरत एक तकियादार बैंच पर बैठी हुई थी। पार्क के बाहर सड़क के किनारे एक फकीर खड़ा राहगीरो को दुआएं दे रहा था, ''खुदा और रसूल का वास्ता....राम और भगवान का वास्ता.... इस अंधे पर रहम करो।''

सड़क पर मोटरों और सवारियों का तांता बन्द हो चुका था। इक्के–दुक्के आदमी नजर आ जाते थे। फकीर की आवाज जो पहले नक्कारखाने में तूती की आवाज थी अब मैदान की बुलंद पुकार हो रही थी। एकाएक वह औरत उठी और इधर–उधर चौकन्नी आंखो से देखकर फकीर के हाथ में कुछ रख दिया और फिर बहुत धीमे से कुछ कहकर एक तरफ चली गयी। फकीर के हाथ में कागज का टुकड़ा नजर आया जिसे वह बार–बार मल रहा था। क्या उस औरत ने यह कागज दिया है?

यह क्या रहस्य है? उसके जानने के कौतुहल से अधीर होकर मै नीचे आया और फकीर के पास खड़ा हो गया।

मेरी आहट पाते ही फकीर ने उस कागज के पुर्जे को दो उंगलियों से दबाकर मुझे दिखाया और पूछा, ''बाबा, देखो यह क्या चीज है?

मैने देखा 10 रुपये का नोट था। बोला – 10 रुपये का नोट है, कहाँ पाया?

फकीर ने नोट को अपनी झोली में रखते हुए कहा, ''खुदा की बंदी दे गई है।''

मैने और कुछ न कहा। उस औरत की तरफ दौड़ा, जो अब अंधेरे में बस एक सपना बनकर रह गई थी।

वह कई गलियों में होती हुई एक टूटे–फूटे गिरे–पड़े मकान के दरवाजे पर रुकी, ताला खोला और अन्दर चली गयी।

रात को कुछ पूछना ठीक न समझकर मैं लौट आया।

रातभर मेरा जी उसी तरफ लगा रहा। एकदम तड़के मैं फिर उस गली में जा पहुँचा। मालूम हुआ वह एक अनाथ विधवा है।

मैने दरवाजे पर जाकर पुकारा– ''देवी, मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूँ।'' औरत बहार निकल आयी। गरीबी और बेबसी की जिन्दा तस्वीर। मैने हिचकते हुए कहा– ''रात आपने फकीर को.....''

देवी ने बात काटते हुए कहा– ''अजी वह क्या बात थी, मुझे वह नोट पड़ा मिल गया था, मेरे किस काम का था।''

मुंशी प्रेमचंद

तितली

तितली हूँ तितली।
रंग बिरंगी तितली।
रस पीकर उड़ जाती।
पानी पीकर सुस्ताती।
दिन ढले सो जाती।

मनखुश, समूह–सागर, उम्र–8 वर्ष

आरती गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, कक्षा– 4

चिड़िया का घर

चिड़िया की चोंच में दाना है।
बच्चों को उसे खिलाना है।
शहर उसे जाना है।
नाच उसे दिखाना है।
पैसे उसे कमाना हैं।
घर उसे बनाना है।

सोनू बैरवा,
समूह–वीर शिवाजी, उम्र–10 वर्ष

योगेश,
11 वर्ष, समूह–गाँधी

आरती मीना, 10 वर्ष, समूह–खुशबू

दाना

एक छोटी सी चिड़िया।
चोंच में दाना लेकर आई।
बच्चे देख उसे चिल्लायें।
बांट–बांट कर दाना खाये।

दिलखुश गुर्जर
उम्र–10 वर्ष, उदय सामुदायिक
पाठशाला गिरिराजपुरा।

बंदर

बंदर राजा बड़ा सिकन्दर।
उछले कूदे बरगद के अन्दर।
केला उसको खूब भाता।
बारिश में खूब नहाता।
बच्चों को वह खूब डराता।
खूँ–खूँ करता हमें हँसाता।
तार, डाल पर झूल जाता।
कच्चे पक्के फलों को खाता।
डमरू के संग नाच दिखाता।
कमर से ठुमका मस्त लगाता।
एक दिन आया स्कूल में बंदर।
जा बैठा कक्षा के अंदर।
बच्चे देख उसको चिल्लाये।
मैडम को वो आँख दिखाये।
ले भागा बच्चों की रोटी।
खाने लगा मोटी–छोटी।
बच्चे भागे उसके पीछे।
बंदर आगे बच्चे पीछे।
जाल कूद कर भाग गया।
बच्चों को आराम आ गया।

जीवनेन्द्र सिंह
शिक्षक, उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

मनीषा, उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू

चलना पड़ता

एक सड़क ऐसी बेकार।
जिसमें चलती मोटर कार।
रात दिन वो चिल्लाये।
पर कोई न रूक पाए।
एक दिन मोटर हो गई पंचर।
बोली सड़क मोटर से।
भैया मुझे क्यूँ भूले आप।
मोटर बोली बहिना चलना पड़ता है।
नहीं चलूं तो अपने घर कैसे पहुँचें।

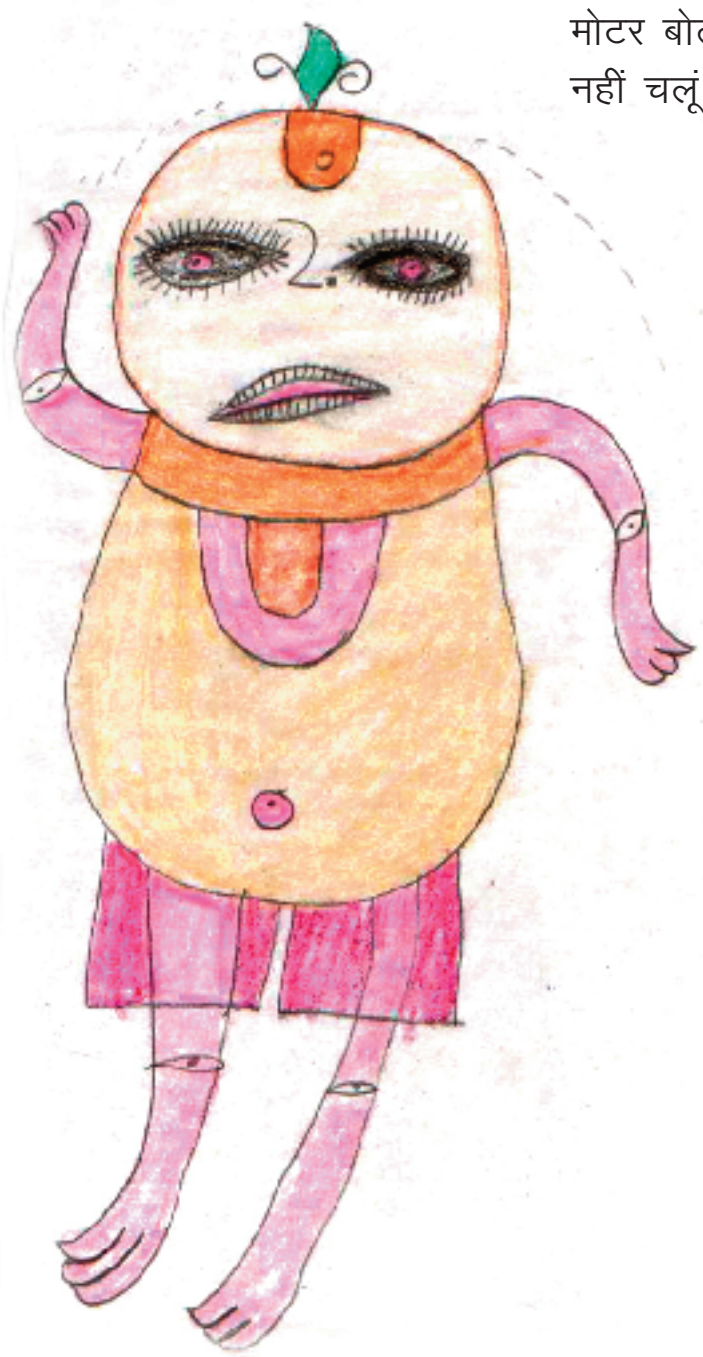

अशोक नायक
कक्षा – 4, उदय सामुदायिक
पाठशाला फरिया

जाल

राधिका, 13 वर्ष, शीशम

एक बार एक किसान था। उसके खेत में पक्षी आते थे तथा खेत में उग रहे अमरूदों को खराब कर देते थे। उसके खेत में पक्षी ना बैठे, फल नहीं खाये इसके लिए उसने अपने खेत के ऊपर जाल लगा दिया। खेत के आस–पास वाले पेड़ पर जो बंदर बैठते थे वे बंदर चतुर थे। एक दिन किसान जाल के नीचे से गुजरा तो बंदर उस जाल के उपर कूदे तो वो किसान ही उस जाल में फस गया। सभी बंदर उसे देखकर हंसने लगे और किसान चिल्लाता रहा। फिर सभी पक्षी और बंदर उसके खेत के अमरूद के पेड़ों में से अमरूद खाने लगे और सभी पक्षी और बंदर बहुत खुश हुए।

काजल महावर, समूह–बरगद, राजकीय विद्यालय आवासन मण्डल स.मा.

हाथी की मित्रता

विकास मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह– रौशनी

बहुत पुरानी बात है। एक जंगल था। उस जंगल में एक हाथी रहता था। उसका मित्र कोई नहीं था। एक दिन वह मित्र की तलाश में चल पड़ा। चलते–चलते उसे एक पेड़ पर एक बंदर दिखाई दिया। हाथी बंदर से बोला कि, ''बंदर भाई आप मेरे मित्र बन सकते हो क्या? मेरा कोई मित्र नहीं है।'' इतना कहते ही बंदर बोल उठा, ''आप तो इतने बडे हो और मैं इतना छोटा हूँ।'' फिर हाथी आगे बढ़ गया। चलते–चलते उसे एक तालाब दिखाई दिया। उस तालाब में एक मेंढक रहता था। हाथी ने मेंढक को देखकर कहा, ''मेंढक भाई, मेरा कोई भी दोस्त नहीं है, क्या तुम मेरे मित्र बन सकते हो?'' मेढक बोला, ''आप इतने बडे हो और मैं इतना छोटा हूँ। आपके साथ चलते समय गलती से मैं आपके पैर के नीचे आ गया तो मेरी चटनी बन जायेगी। मैं आपका मित्र नहीं बन सकता।'' फिर हाथी आगे चल दिया। उसकी नजर हिरणों के झुंड पर पड़ी। उस झुण्ड के पीछे शेर दौड़ रहा था। हाथी वहाँ हिरणों के पास पहुँचा और एक हिरण से बोला, ''भाई, आप इस तरह क्यों भाग रहे हों?'' हिरण बोला, ''हमारे पीछे शेर पड़ गया है।'' हाथी थोड़ी देर तक वहाँ खड़ा रहा। फिर हाथी के पास शेर आ गया तो हाथी ने शेर के एक सूंड की मारी तो शेर ने दो–तीन कुलाटिया खाई। फिर शेर डर के मारे वहाँ से भाग गया। हाथी ने हिरणों को यह बात बताई कि मेरा कोई दोस्त नहीं है और कहा, ''क्या आप मेरे दोस्त बन सकते हो?'' फिर हिरणों ने कहा कि आपने हमारी जान बचाई है, हम आपके मित्र क्यों नहीं बन सकते? फिर सभी हिरण उस हाथी के मित्र बन गये।

जितेन्द्र नायक, उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

उड़ने वाला घोड़ा

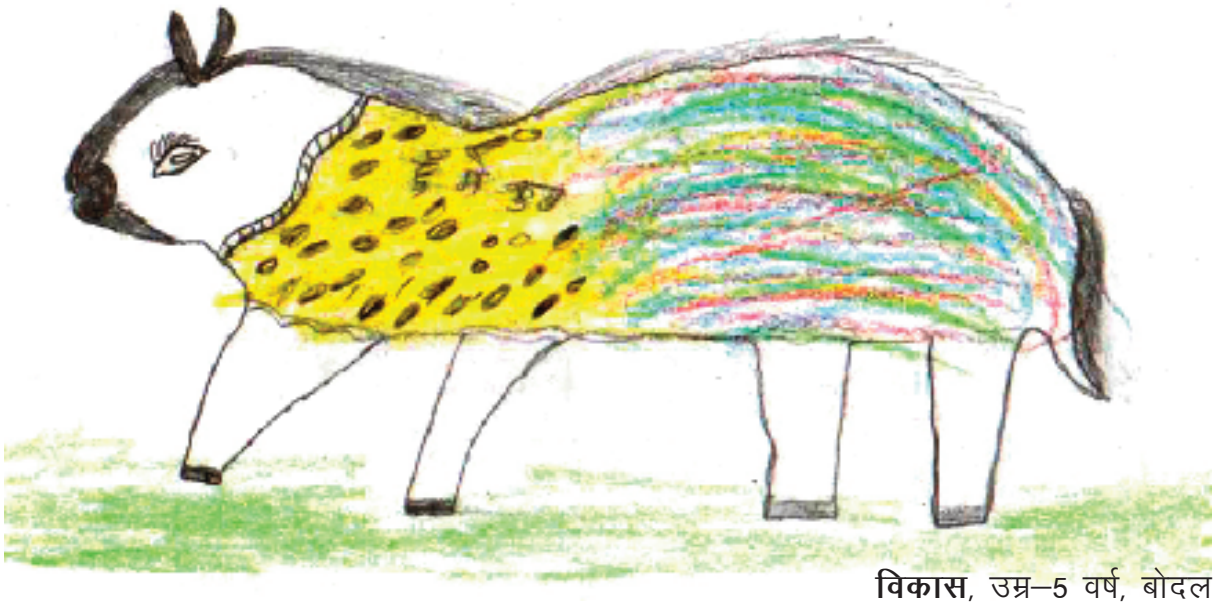

विकास, उम्र–5 वर्ष, बोदल

एक आदमी था। वह जंगल में उसका घोड़ा ढूंढने जा रहा था। उसका घोड़ा उड़ने वाला था। उस आदमी को घोड़ा नहीं मिला। वह बहुत दुःखी हुआ। उसने सोचा कि अब मेरा घोड़ा नहीं मिलेगा। इतने में एक चील आकर एक पेड़ पर बैठ गई। उसी पेड़ के नीचे वह आदमी बैठा रो रहा था। चील ने आदमी से पूछा, ''भैया तुम इतने दुःखी क्यों हो रहे हो?'' आदमी ने कहा, ''मेरा उड़ने वाला घोड़ा खो गया है।'' चील ने कहा, ''मैंने तुम्हारे घोड़े को एक राक्षस के साथ उड़ते हुए देखा है। उस राक्षस का जीव पहाड़ पर एक दीपक में है। उस दीपक को बुझाना आसान नहीं है। वह समुद्र के पानी से ही बुझ सकता है। मैं कल समुद्र से पानी लेकर आऊंगी और उस दीपक को बुझा दूंगी।'' सुबह होने पर चील समुद्र की ओर उड़ चली और पानी लाकर दीपक बुझा दिया जिससे राक्षस मर गया। फिर घोड़ा आदमी के पास आ गया। आदमी बहुत खुश हुआ। उसने चील का आभार माना और घर चला गया। वह बहुत खुश था। एक दिन वह आदमी घोड़े पर बैठकर ऊँचा उड़ रहा था। इतने में उसने देखा कि एक उड़ने वाला शेर किसी चील के पीछे पड़ रहा था। उस आदमी ने तेज रफ्तार में घोड़ा दौड़ाया और शेर के आने से पहले पहुँचकर चील को लेकर घर ले आया। वो चील वही चील थी जिसने उस आदमी के घोड़े के बचाया था। आदमी और चील वापस मिलकर बहुत खुश हुए।

धर्मसिंह मीना, समूह–खुशबू, उम्र–9 वर्ष

बेचारा मुर्गा

मनीषा, संगम, उम्र–11 वर्ष

एक मुर्गा था। वह एक जंगल में अपने परिवार के साथ रहता था। एक दिन उस जंगल में भूकम्प आ गया। भूकम्प आने के कारण पूरा जंगल नष्ट हो गया। बस मुर्गे का परिवार बच गया। मुर्गे का परिवार एक गाँव में जाकर रहने लग गया। गाँव के लोगों ने सोचा मुर्गे का गाँव में रहना अशुभ होता है इसलिए इस मुर्गे को कल यहाँ से भगाना होगा। एक ने कहा मुर्गी को तो रख लेते हैं क्योंकि यह तो अण्डे देगी। सभी ने कहा हाँ–हाँ यह सही है। दूसरे दिन जब सुबह हुई तो जैसे ही मुर्गे ने कुकडू कूं बोला तो गाँव वालों ने उसे लाठियों से मारना शुरू कर दिया। बेचारा मुर्गा बाल–बाल बचा फिर वे उस गाँव को छोड़ कर दूसरे गांव में जाकर रहने लग गये। अब दूसरे गाँव वालों ने सोचा कि मुर्गे का गाँव में रहना कितना शुभ होता है क्योंकि मुर्गा ही तो हम सबको सुबह जगाता है। कूकडू कूं की आवाज निकालकर। मुर्गे ने उन गाँव वालों से कहा कि मुझे दूसरे गाँव से निकाल दिया, उन्होंनें कहा कि मुर्गे का गाँव में रहना अशुभ होता है। फिर गाँव वालों ने कहा कि चलो हम पांच आदमी चलते हैं और उन गाँव वालों से मिलते हैं और उन्हें समझाते हैं कि शुभ–अशुभ कुछ नहीं होता है।

मनीषा गुर्जर, समूह–पीपल, उम्र–13 वर्ष

समझदार चूहा

एक बार एक चूहा था। उसके बिल में एक सांप घुस गया। चूहा जब अपने बिल में घुसा तो उसे सांप का चेहरा दिखाई दिया। चूहा बहुत घबरा गया। चूहा जल्दी से बिल के बाहर आ गया और अपने दोस्त नेवले के पास गया। चूहे ने नेवले को बताया कि उसके बिल में एक सांप घुस गया है। नेवला चूहे के बिल के पास आया। जब सांप बिल से बाहर निकल रहा था तो नेवला उस सांप पर झपट पड़ा और उसे खाने लगा। तभी सांप ने चूहे से माफी मांगी। चूहा बोला, '' तुम अब किसी चूहे के बिल में नहीं घुसना।'' सांप बोला, ''मैं किसी के भी बिल में नहीं घुसुंगा।'' थोड़े दिनों बाद वह सांप फिर किसी चूहे के बिल में घुस गया। उस चूहे ने आकर

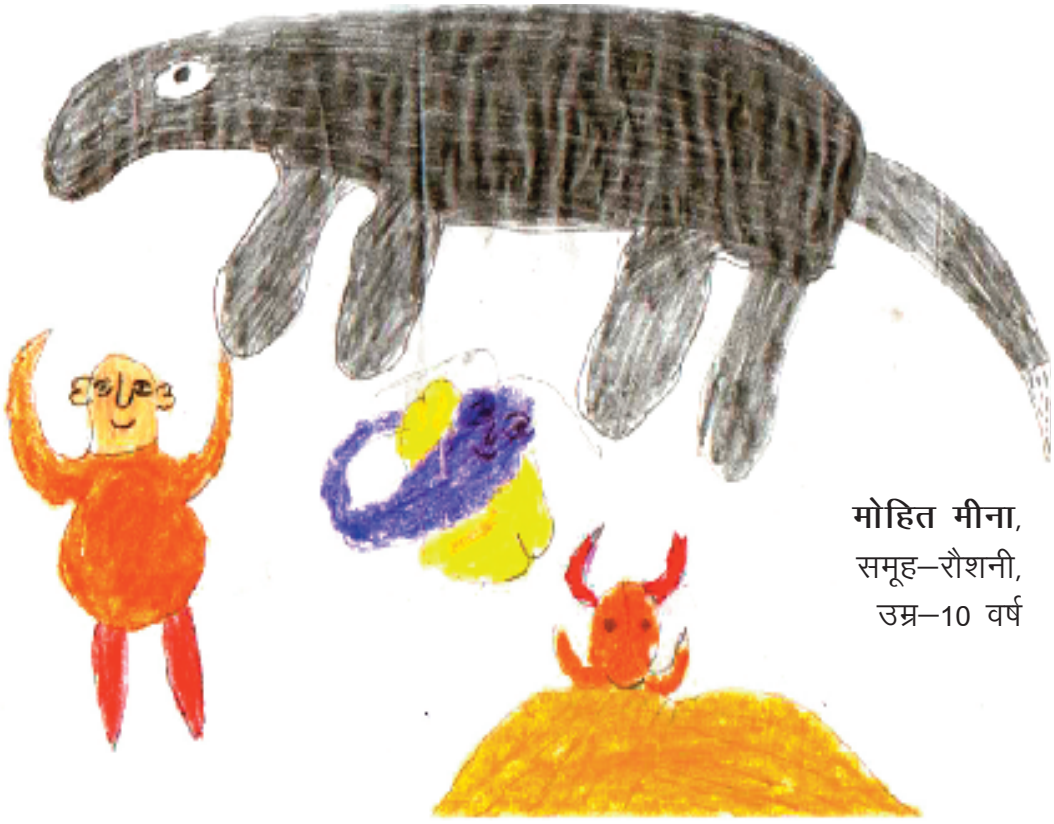

मोहित मीना,
समूह–रौशनी,
उम्र–10 वर्ष

पहले वाले चूहे को बता दिया। चूहा नेवले को लेकर उसी जगह पहुँचा फिर नेवले ने सांप को मार दिया। उस चूहे को दया आ गई तो चूहा नेवले से बोला, ''इस सांप के टुकड़ों को वापस जोड़ दो।'' नेवले ने सांप के टूकड़ों को वापस जोड़ दिया और सांप जिंदा हो गया। अब सांप, चूहे और नेवले का दोस्त बन गया और वे तीनों दोस्त खुशी से रहने लगे।

सुरभी गोयल, समूह–बरगद, उम्र–9 वर्ष

धर्मसिंह मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

सुल्तान

बहुत समय पहले की बात है। एक हाथी का बच्चा अपनी मां से बिछुड़ गया। वह बच्चा बहुत प्यासा था इसलिए वह नदी के किनारे पानी पीने गया। पानी पीते समय उस नदी पर राजा के सिपाहियों की टोली ने उसे देखा और वे उसे बांधकर राजा के बेटे के पास ले गये। जिससे कि राजकुमार उस हाथी के बच्चे के साथ खेल सके। राजकुमार हाथी के बच्चे को देखकर बहुत खुश हो गया। जब हाथी के बच्चे को भूख लगती तो सारे सैनिक उसके लिए दूध, केले लेकर आते, इससे हाथी का बच्चा बहुत खुश था। एक दिन सिपाहियों ने राजा से कहा, ''राजा आपके राजकुमार व हाथी के बच्चे में गहरी दोस्ती हो चुकी है।'' इस बात को राजकुमार ने सुन लिया और उसने अपने सिपाहियों से कहा कि कोई भी इसे हाथी का बच्चा नहीं कहेगा। मैंने इसका नाम सुल्तान रखा है। अब राजकुमार और सुल्तान पक्के दोस्त बन गये।

राहुल, समूह–बरगद, उम्र–9 वर्ष

महेन्द्र,
उम्र–7 वर्ष,
समूह–सागर

एक बार एक गाय थी। वह बहुत भूखी थी। उसे कई दिनों से खाने के लिए कुछ नहीं मिल रहा था। एक दिन उसे हरी–भरी घास दिखाई दी। उसने सोचा घास खाने से पेट भर जायेगा। जैसे वह घास खाने लगी तभी घास बोली, ''मुझे मत खाओ, खाना ही है तो जंगल में जाओ वहाँ हरे–हरे पेड़ पौधों की पत्तियाँ मिलेगी।'' गाय बोली, ''मुझमें इतनी ताकत नहीं है कि मैं अंदर जाकर घास–फूस खा पाऊँ। मुझे तुम थोड़ी सी घास खा लेने दो।'' इतनी देरे में उधर से गाय को पकड़ने वाले आ गये और वे गाय को पकड़कर ले गये और उसे ले जाकर बाड़े में बांध दिया। वहाँ उसने अलग–अलग जानवरों को देखा। सब इतने मरियल कमजोर थे। थोड़ी देर बाद गाय के आगे घास– चारा डाला। गाय भूखी थी इसलिए वह जल्दी–जल्दी सब खा गई। जब सब चले गये तो अन्य जानवरों ने कहा, ''तुम्हें ये अच्छा–अच्छा खिलाकर दूसरों को बेच देंगे। वहाँ तुम्हें काट दिया जायेगा और तुम्हारा मांस, चमड़ी व हड्डियों को बेच दिया जायेगा। हमारे साथ भी यही होगा। इसलिए हम खाना नहीं खाते हैं। तुम भी मत खाओ।'' गाय ने सभी जानवरों से कहा, ''अगर हमारे साथ ऐसा होने वाला है तो हमें मिलकर योजना बनानी चाहिए, जिससे हम यहाँ से भाग छूटे। हम रात को ऐसे सोयेंगे कि उन्हें लगेगा कि हम सो रहे हैं, जब वो चले जायेंगे तब हम सब यहाँ एक साथ भाग छूटेंगे।'' रात को वे लोग जानवरों को बांधने आये लेकिन जानवरों की दशा देखकर बिना बांधे चले गये। बस इसी मौके के इंतजार में सभी थे। जैसे ही आधी रात हुई सब भाग छूटे और खुले जंगल में जा पहुँचे। गाय की हिम्मत से सभी जानवर मुक्त हो गये व आराम से जीने लगे।

रेणू गुर्जर, शिक्षिका, ग्रा.शि.के. राज. प्राथ. विद्या. बोदल

शेर राजा

विकास, उम्र–9 वर्ष, समूह–रौशनी

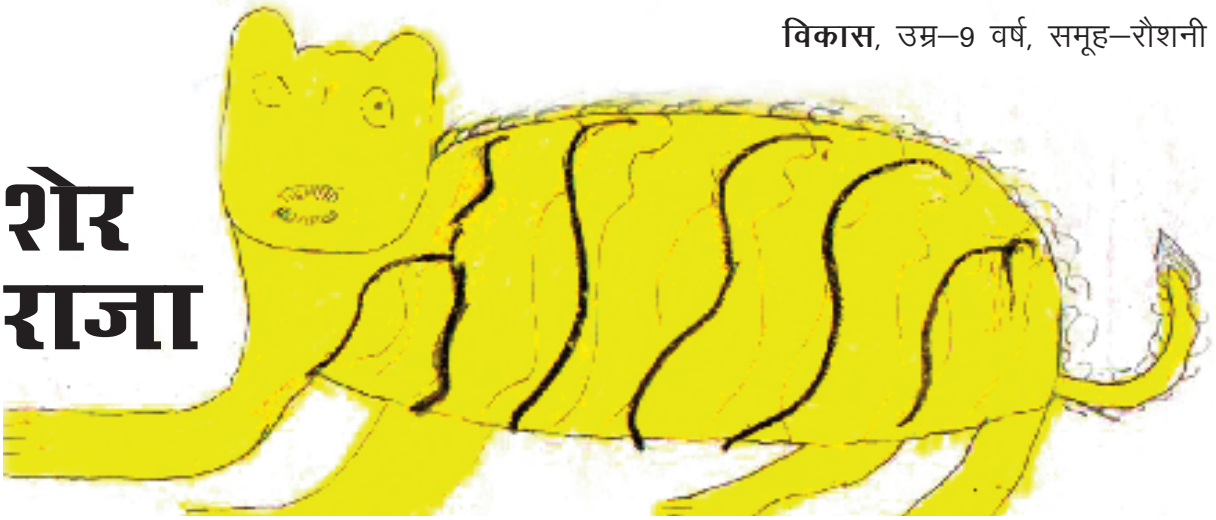

एक बहुत पुराना जंगल था। उस जंगल में सभी तरह के जानवर रहते थे। हाथी, घोडे, मगरमच्छ, भालू, बंदर, उड़ने वाले, चलने वाले, रेंगने वाले, तैरने वाले सभी जीव जन्तु एक साथ रहते थे। हॉ! आदमी भी उनके साथ रहता था। उस जंगल में अनेक परेशानियाँ थी। कहीं पर पानी नहीं था, कहीं पेड़ नहीं थे, कहीं चारे की कमी थी तो कहीं जानवर बिमारियों से मर जाते थे। जिसके कारण जंगल के जानवर आए दिन कठिनाई का जीवन जीते थे। ऊपर से शिकारियों के डर से सभी जानवर भयभीत रहते थे। एक दिन जंगल के सभी जानवरों ने मिटिंग की। मिटिंग में सभी समस्याओं के समाधान तलाशने के लिए गाय, बकरी, किसान, चींटी और हिरण की एक पंचायत बनाई। पंचायत को जंगल की समस्याओं को सुधारने के लिए कहा गया। काफी सोचने के बाद पंचायत ने कहा, ''हमारी सबसे बड़ी समस्या है, कि हमारे पास कोइ नेता नहीं है। हमें सही राह दिखाने वाले एक नेता की जरूरत है। जो सच्चा, ईमानदार, वफादार होने के साथ–साथ जंगल के जानवरों के प्रति संवेदनशील भी होना चाहिए।'' अगले दिन नेता का चुनाव करने के लिए सभा बुलाई गई। परन्तु पूरे जंगल में तलाश करने पर भी ऐसा नेता नहीं मिला। अन्त में पंचायत के लोगों ने तय किया हम दूसरे जंगल से अच्छा नेता तलाश कर लाएंगे। यह कार्य एक बार फिर गाय, बकरी, किसान, चींटी और हिरण की पंचायत को दिया गया। कई जंगलों में तलाश करने के बाद पंचायत के लोगों को एक शेर नेता मिला। पंचायत के जानवरों ने शेर से पूछा तो शेर ने झट हाँ कर दी। शेर ने कहा, ''मैं जंगल के जानवरों की भलाई के लिए अपनी जान लगा दूंगा। आप मुझे अपना नेता बना लो।'' पंचायत के जानवरों को शेर पर विश्वास हो गया और वे शेर को अपना नेता बनाकर ले आये। अगले दिन आते ही शेर ने अपना काम शुरू कर दिया। शेर के डर से शिकारियों ने जंगल में आना बंद कर दिया। शेर रोज पूरे जंगल का चक्कर लगाता और सभी जानवरों का हाल पूंछता। शेर ने सभी जानवरों को एकत्र

कर कहा, ''जंगल में पानी की कमी का कारण है, हाथियों द्वारा पानी का दुरूपयोग करना। हाथी नहाते–धोते व पीते समय बहुत ज्यादा पानी बर्बाद करते हैं। दूसरा, हाथी, बंदर, गैंडा और भैंसा अपनी मस्ती के लिए फलों और पेडों को नुकसान पहुंचाते हैं। जिसके कारण जंगल में पेड़ों की कमी हो रही है। इसलिए अगर ये जंगल को नुकसान न पहुँचाये तो जंगल फिर से हरा–भरा हो जायेगा। वर्षा भी अच्छी तरह होगी तो खाने को चारा भी अच्छा हो जायेगा। माँस खाने वाले जानवर अपनी भूख मिटाने के लिए मरे जानवरों को खाएंगे। यदि उनको मरे जानवर नहीं मिलते हैं, तो वे बूढे या बीमार जानवर को खा सकते हैं। जिसके जीने की उम्मीद न हो।'' जानवरों को शेर की बात अच्छी लगी। पंचायत ने सभी को पेड़–पौधे, पानी की बर्बादी करने से मना कर दिया। साथ मे शेर द्वारा कही सारी बातें भी मान ली। अगली बार वर्षा के बाद भी जंगल के ताल तलैया भरे रहे। जंगल मे घास भी खूब रही। जिसके कारण सभी जानवर भर पेट खाना खाते और तन्दुरूस्त रहते। अब जैसे–जैसे समय गुजरता गया शेर भी आलसी हो गया। उसने जंगल में घूमना बंद कर दिया। उसने अपनी मदद के लिए लोमड़ी और भेड़िये को रख लिया। अब जंगल की सारी बाते शेर को लोमड़ी और भेड़िया ही बताता था। जंगल में शेर के न घूमने के कारण शिकारी आने लगे। शिकारियों के कारण जंगल में जानवर कम होने लगे। जंगल कटने लगा। शेर की लापरवाही का फायदा उठाकर लोमड़ी और भेड़िया भी छोटे व कमजोर जानवरों को मारकर खाने लगे। कभी–कभी वे शेर को भी चीतल का शिकार गुफा में ही ले जाकर खिलाते थे। शेर भी उनसे बड़ा खुश रहता था। अब जंगल का कोई भी जानवर शिकायत लेकर शेर के पास जाता तो शेर उसे मारकर भगा देता। जानवरों ने शेर के पास जाना ही बंद कर दिया। एक दिन परेशान होकर गाय, बकरी, किसान, चींटी और हिरण ने जंगल की पंचायत बुलाई। सबकी शिकायते सुनने के बाद पंचात ने शेर को बुलाया और उससे कहा, ''तुम अपना वादा भूल गये हो। तुम्हारे कारण जंगल के जानवर परेशान हैं। यह सुनकर शेर को गुस्सा आ गया। शेर ने उसी समय पंचायत के जानवरों पर हमला कर दिया। यह देख जंगल के बाकी जानवर भी डरकर भाग गये। किसान ने जंगल में रहना ही छोड़ दिया, वह बकरी के साथ जंगल से बाहर गाँव बनाकर रहने लगा। चींटी जमीन के अन्दर जाकर रहने लगी। गायों ने समूह बनाकर रहना सीख लिया। हिरण ने अपने पैरों को मजबूत किया और भागना सीख लिया। इसके बाद जंगल की सभा नहीं हुई। शेर आज भी जंगल का राजा बना हुआ है और सारे जानवर उससे डरते हैं।

विष्णु गोपाल

बात लै चीत लै

जादुई शक्ति

दीपिका, उम्र–8 वर्ष, समूह–रिमझिम

एक बार एक राजा था। उसके चार राजकुमार थे और एक राजकुमारी थी। राजा और रानी अपने बच्चों के साथ रहते थे। एक दिन रानी बीमार हो गई। वह राजा के किसी भी वैद्य–चिकित्सक से ठीक नहीं हुई। राजा ने रानी का इलाज देश–विदेशों में करवाया लेकिन रानी ठीक नहीं हो पाई और मर गई। अब राजा उदास सा रहने लगा गया। राजा के सिपाहियों ने राजा से कहा कि आप दूसरा विवाह कर लो तो राजा ने दूसरा विवाह कर लिया। एक दिन नई रानी पूजा करने गई थी। महल के पास एक बगीचा था। उस बगीचे में चारों राजकुमार खेल रहे थे। उस रानी के पास शक्ति थी। उसने शक्ति से चारों राजकुमारों को बगुला बना दिया। चारों राजकुमार बगुले बनकर उड़ गये तो यह खबर राजा के पास पहुँची। राजा बहुत दुखी हुआ और उनकी बहिन भी रोने लगी। राजकुमारी बच गई थी नहीं तो वह कुछ ना कुछ बन जाती। महल के पास में एक बड़ा सा तालाब था। राजमुमारी तालाब के किनारे बैठी थी। तालाब में से एक परी नहाकर जा रही थी। परी ने राजकुमारी को देखकर कहा, ''मुझे पता है कि तुम्हारे भाईयों को बगुला किसने बनाया है। तुम्हारी माँ के पास शक्ति है उसी ने तुम्हारे भाइयों को बगुला बना दिया था।'' तुम्हें छः महीने तक मौन व्रत करना पड़ेगा। मैं तुम्हें जादुई पत्ते देती हूँ तुम्हे इससे चार कुर्ते बनाने हैं। वह जंगल में ही रहकर मौन व्रत करने लगी और कुर्ते बनाने लगी। एक राजा उस जंगल में आया जिसका नाम मानसिंह था। मानसिंह उसको घोड़े पर बैठाकर ले आया। लेकिन उसने मौन नहीं तोड़ा और कुर्ते बनाने में लगी रही। एक दिन चारों बगुले छत के नीचे खड़े थे। राजकुमारी ने देख लिया तो उसने चारों पर एक–एक कुर्ता फेंक दिया। चारों बगुले राजकुमार बन गये और उनकी माँ की शक्ति भी खत्म हो गई। फिर राजकुमारों ने अपनी बहिन की शादी राजा मानसिंह के साथ करवा दी। राजा मानसिंह उन्हें अपने साथ राज्य में ले गया। वे वहाँ खुशी से रहने लगे।

आरती मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

1 तीन सीस दो नैना, मेरा बलमा देखा है की बहना?

2 मिट्टी में घुड़सण्डा खेले, पूछ मेरे हाथ में।

3 मिट्टी गूंदूं, चाक धरू, फेरू बार–बार।

चतरू है तो जान ले मेरी जात.....

4 प्यार करूँ तो घर चमका दूँ।

वार करूँ तो ले लूँ जान।

जंगल में मंगल कर दूं।

कभी शहर कर दू वीरान।

5 एक खेत ऐसा ऊपर तोता नीचे बगुला।

6 शाम सुबह गंगा नहाए, कमर पे मेरी चढ़ के आये।

डूब–डूब डुबकी लगाए, समझदार है जो उत्तर बताये।

राजेश बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

हीहीही-ठीठीठी

1. टीचर – बच्चों बताओ कि दूध को खराब होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए?
   बच्चे – उसे पी लेना चाहिए।
2. टीचर – (बच्चे से) तुम किस खानदान से हो?
   बच्चा – जानवरों के खानदान से।

नीरू गुर्जर,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

टीचर – क्या मतलब है?
बच्चा – पापा मुझे उल्लू का पट्ठा, मम्मी मुझे गधा, दादाजी मुझे शेर का बेटा और दादी जी बंदर कहती हैं।

3. टीचर – (बच्चे से) तुम आज इतनी देर से स्कूल क्यों आए हो?
   बच्चा – मम्मी–पापा लड़ रहे थे।
   टीचर – वो लड़ रहे थे तो तुम क्यों लेट हो गए?
   बच्चा – मेरा एक जूता मम्मी के पास और दूसरा जूता पापा के पास था।

इंटरनेट से साभार

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक बार एक चिड़िया और गिलहरी थी। चिड़िया रोज एक पेड़ के नीचे फल खाने जाती थी। एक दिन गिलहरी बोली चिड़िया तुम रोज सवेरे कहाँ जाती हो? चिड़िया बोली मैं एक पेड़ के नीचे फल खाने जाती हूँ। गिलहरी बोली मुझे भी साथ लेकर चलो।.....

महेन्द्र गुर्जर, *7 वर्ष, समूह–सागर, द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

आसमान से बरसे आग
धरती से उड़ती खाक

विष्णु *द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

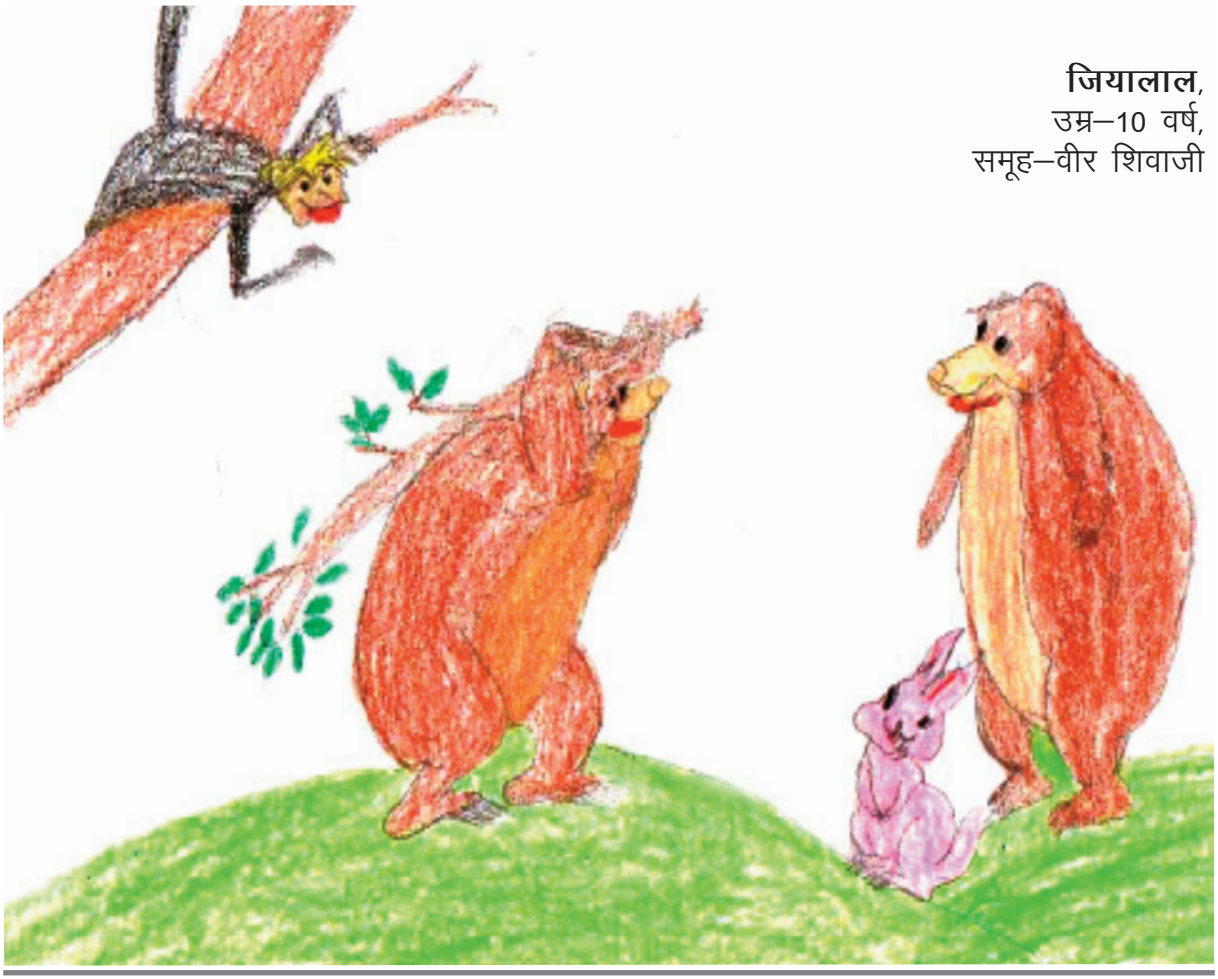

जियालाल,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी

मोंरंगे जनवरी–फरवरी, 2016 *के अंक में दी गई अधूरी कहानी को आगे बढ़ाते हुए बच्चों ने ये कहानी लिखी हैं –*

एक बार एक नदी में चार बतखें तैर रही थी। उनमें एक बूढ़ी बतख भी थी जो पानी में ज्यादा तैर नहीं पा रही थी। बूढ़ी बतख उनकी पीठ पर बैठकर तैरती थी। एक दिन बूढ़ी बतख नदी के पार रह गई। उसे नदी में एक मछली दिखाई दी.....

....बतख बोली क्या आप मेरी मदद करोगी? मछली बोली, ''हाँ मैं आपकी मदद जरूर करूंगी।'' बतख बोली, ''यहाँ पर मेरे बच्चे आते हैं क्या?'' मछली बोली, ''हाँ, आपके बच्चे यहाँ आते हैं।'' बूढी बतख बोली, ''आप मेरे बच्चों को ला सकती हैं क्या?'' मछली बोली, ''हाँ मैं ला सकती हूँ।'' मछली उनको लेने चली गई और बच्चों से कहा, ''आपको आपकी माँ बुला रही है।'' बच्चे बोले, ''चलो माँ के पास चलते हैं।'' बच्चे मछली के साथ–साथ उनकी माँ के पास आ गये। बच्चे बोले, ''माँ आपने हमको क्यों बुलाया?'' बूढ़ी बतख बोली, ''मेरे प्यारे बच्चों, मुझसे तैरा नहीं जा रहा है। मुझे पीठ पर बैठाकर ले चलो।'' मछली बोली, ''क्या मैं भी चल सकती हूँ।'' बच्चे बोले, ''हाँ, आप भी चलो।'' उस बूढ़ी बतख को बच्चे घर ले गये। फिर मछली बोली, ''क्या अब मैं वापस जा सकती हूँ?'' बूढी बतख ने कहा, ''हाँ, जरूर जा सकती हो।'' मछली ने कहा, ''मुझे किसी से मिलने जाना है आपसे मैं फिर मिलने आऊंगी।''

सीमा मीणा, उम्र–9 वर्ष, कक्षा–5, रा.उ.प्रा.वि. पीपल्दा।

....उसने मछली को अपने पास बुलाया और कहा कि, ''बहिन मैं बहुत दिनों से मेरी सहेली बतखों के साथ नदी पार आया करती थी, आज मैं मेरी सहेली बतखों सें बिछुड़ गई हूँ। इसलिए तुम मेरी सहायता करो।'' मछली ने कहा, ''बहिन, मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती। क्योंकि मैं बहुत छोटी हूँ।'' यह कहकर वह चली गई। बाद में एक मगरमच्छ वहाँ आया, उसने बतख को देखा। बुढ़ी बतख ने अपनी दु:ख भरी कहानी उसे सुनाई तो मगरमच्छ तैयार हो गया और बूढ़ी बतख को अपनी पीठ पर बैठाकर चल दिया। बीच नदी में जाकर मगरमच्छ का मन बदलने लगा। उसने सोचा क्यों न मैं इस बतख को मारकर खा लूँ। फिर सोचा बेचारी बूढ़ी बतख है। विपत्ति के समय इसकी सहायता करनी चाहिए। वह उसे नदी पार ले गया। वहाँ उसकी सहेली बतखें बैठी हुई थी, तो वहीं छोड़ दिया। बूढ़ी बतख अन्य बतखों से बोली, ''बहनों तुम मुझे अकेली छोड़ आई, बेचारे मगरमच्छ ने मेरी सहायता की और मुझे यहाँ लाकर छोड़ा। नहीं तो मुझे वहीं पर कोई सियार या जानवर खा जाता। फिर सभी बतखों को अपनी गलती का अहसास हो गया। उन्होंने मगरमच्छ से माफी

मांगी और कहा, आगे से हम कभी ऐसी गलती नहीं करेंगे। उन्होंने मगरमच्छ से कहा कि यदि कभी तुम्हें हमारी सहायता की आवश्यकता पड़े तो हम तुम्हारे लिए तैयार रहेंगे।

दिलराज पाण्डेय, उम्र–13 वर्ष, राजकीय विद्यालय पावण्डी

....बतख ने मछली से कहा कि तुम मुझे नदी को पार करा सकती हो?'' मछली ने कहा, ''मैं तो बहुत छोटी हूँ, इसलिए मैं तुमको पार नहीं करा सकती हूँ।'' मछली ने फिर मगरमच्छ को बुलाया और उससे बूढ़ी बतख को नदी के पार छोड़ने के

गोलू बैरवा,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी

लिए कहा। मगरमच्छ बूढ़ी बतख को नदी पार कराने के लिए पीठ पर बैठाकर ले गया। बीच नदी में मगरमच्छ ने डुबकी लगाई और उस बतख को खा गया। वे तीनों बतखें रो रही थी। वह मछली उनके पास आई और बोली कि ''तुम क्यों रो रही हो?'' बतखे बोली हमारी बूढ़ी बतख खो गई है। मछली ने कहा, ''उसे तो मैंने मगरमच्छ के साथ भिजवाया था। क्या वह तुम्हारे पास नहीं पहुँची?'' बतखों ने कहा, ''नहीं पहुँची।'' फिर मछली ने उस मगरमच्छ को बुलाया और पूछा तो मगरमच्छ ने कहा, ''मैंने तो उसे घर छोड़ दिया था।'' मछली ने कहा, ''सच–सच बताओ नहीं तो मैं तुम्हें पुलिस में पकड़वा दूंगी।'' फिर मगरमच्छ ने कहा, ''मैं उसे खा गया।'' मछली और सारी बतखों को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने तय किया कि आगे से कभी मगरमच्छ पर विश्वास नहीं करेंगे।

कृष्णा बैरवा, उम्र–10 वर्ष, कक्षा–5, रा.प्रा.वि. पावण्डी

तेरी मेरी, मेरी तेरी बात

प्रिय बच्चों, मोरंगे की ओर से आपको नमस्ते।

लम्बे समय के बाद पत्रों का सिलसिला शुरू हुआ था। लेकिन इस बार फिर आपका कोई पत्र हमें नहीं मिला। यह ठीक बात नहीं है। आपके पत्र ही हमें आपकी पसन्द ना पसन्द से अवगत करवाते हैं और पत्र के माध्यम से हम आपसे सीधे बात कर पाते हैं। आप अपने पत्र लिखना जारी रखें।

मोरंगे।

नन्दिनी वर्मा,
उम्र–7 वर्ष
समूह–कदम्ब

पहेलियों के ज़वाब –

1. श्रवण और उसके अंधे माता–पिता 2. खुरपा 3. कुम्हार 4. बिजली 5. मूली 6. मटकी

लालीबाई गुर्जर, उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर